आमंत्रण

तिथि : 22 मार्च, 2017

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ : भाषा एवं साहित्य का द्वन्द्व

BABASAHEB BHIMRAO AMBEDKAR UNIVERSITY
LUCKNOW
प्रज्ञा शील करूणा
ESTABLISHED 1996

आयोजक

हिन्दी विभाग

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

स्थान :–

पर्यावरण विज्ञान विद्यापीठ सभागार
बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, उत्तर प्रदेश – 226025

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ में स्थित एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। इसे राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिशद (NAAC) द्वारा वर्ष 2015 में 'ए' श्रेणी प्रदान किया गया। यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के एक उत्कृष्ट केन्द्र के रूप में विकास की ओर अग्रसर है। विश्वविद्यालय की विशिष्टता उसके अधिनियम और विधियों में निहित है। विश्वविद्यालय के उद्देश्य इस प्रकार हैं– बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर के जीवन दर्शन के द्वारा सामाजिक न्याय, राष्ट्रीय एकता पर आधारित अध्ययन और सिद्धांतों को बढ़ावा देना। अनुसूचित जाति/अनु. जनजाति के शैक्षिक और आर्थिक हितों को बढ़ावा देना। कला, साहित्य, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विषयों में एकीकृत पाठ्यक्रम द्वारा उन्नत ज्ञान को बढ़ावा देना। अंतर–अनुशासनात्मक अध्ययन और अनुसंधान के क्षेत्र में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया में नवाचारों को बढ़ावा देना।

विश्वविद्यालय परिसर तेजी से प्रगति की ओर उन्मुख है और साथ ही विभिन्न आधुनिक सुविधाओं से समृद्ध है। जैसे– डाकघर, बैंक, विद्युत गृह, छात्रावास, अतिथि गृह, स्वास्थ्य केन्द्र, शिक्षक/कर्मचारी आवास, संगणक केन्द्र, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के लिए कोचिंग सेंटर, आवासीय कोचिंग अकादमी, प्लेसमेंट सेल, महिला सेल, आरटीआई सेल, अनुसूचित जाति/जनजाति सेल, लीगल ऐड क्लीनिक और बस शटल सेवा आदि।

हिन्दी विभाग

वर्तमान समाज तथा संस्कृति की चुनौतियों और रोजगार की संभावनाओं को भारतीय ही नहीं वरन् वैश्विक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर हिन्दी पाठ्यक्रम जुलाई 2013 से आरम्भ किया गया। यह विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रमों में अध्ययन, अध्यापन और शोध की दृष्टि से एक अन्तर्राष्ट्रीय मानक रखता है। समाज, सभ्यता तथा रोजगार के नये–नये पहलुओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने हिन्दी साहित्य स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम को नितान्त नये ढंग से निर्मित किया है। यह पाठ्यक्रम मौजूदा समाज में विद्यार्थियों को न केवल अपने ही देश में बल्कि समूचे विश्व में रोजगार की संभावना उपलब्ध कराता है।

विश्वविद्यालय का इस बात पर जोर रहा है कि हिन्दी में स्नातकोत्तर अध्ययन करते समय विद्यार्थी को ज्ञान–विज्ञान के दूसरे अनुशासनों की भी इतनी जानकारी मिल चुकी हो कि वे साहित्य व मानव सभ्यता के सम्बन्धों को ठीक–ठीक पहचान सकें और उनमें रचना एवं अनुसंधान की मौलिक प्रतिभा का विकास हो सके। स्नातकोत्तर–हिन्दी की अवधि 4 सेमेस्टर (दो वर्ष) है और इसमें 40 छात्रों के अध्ययन की सुविधा है

राष्ट्रीय संगोष्ठी की अवधारणा

वर्तमान समय में पत्रकारिता राजनीति से लेकर सामाजिक परिवेश तक हर क्षेत्र में मौजूद है। पत्रकारिता के माध्यम से ही सामाजिक मूल्य निर्मित किये जा रहे हैं और राजनीति को दिशा दी जा रही है। भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन से लेकर बाद के पूरे दौर में इस तथ्य को देखा जा सकता है। राष्ट्रीय आन्दोलन के दौरान राजनेताओं ने पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से जनता को जागरूक करने का प्रयास किया। उस दौर की पत्रकारिता ने अंग्रेजी सरकार की नीतियों के खिलाफ़ जमकर प्रचार किया। इसी कारण गणेश शंकर विद्यार्थी से लेकर यशपाल तक को जेल जाना पड़ा और उनके समाचार–पत्रों पर प्रतिबन्ध भी लगा दिया गया। वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखें तो प्रिन्टिंग प्रेस के आने के बाद ही ज्ञान–विज्ञान का व्यापक स्तर पर प्रसार हुआ जिसके कारण ईसाई धर्म के प्रभुत्व को चुनौती मिली। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से लेकर 1917 की रूसी क्रांति तक में प्रिन्टिंग प्रेस की भूमिका को देखा जा सकता है। प्रिन्टिंग प्रेस के विकास के साथ–साथ समाज में विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं का प्रादुर्भाव हुआ। अभी तक के इतिहास में धर्म की जो केन्द्रीय सत्ता थी उसकी जगह अब तर्क पर आधारित चिन्तन ने ले ली जिसका खामियाजा गैलिलियो से लेकर और बहुत सारे वैज्ञानिकों और रचनाकारों को भुगतना पड़ा। 1789 की क्रांति में समाज के बुर्जुवा वर्ग ने बहुत ही प्रगतिशील भूमिका निभाई थी। कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद के विकास के प्रारम्भिक चरण में इस वर्ग की भूमिका को जनपक्षधर बताया है। भारत के संदर्भ में यदि देखा जाये तो पश्चिमी ज्ञान–विज्ञान का लाभ राजा राममोहन राय से लेकर रवीन्द्रनाथ टैगोर, रानाडे आदि को मिला। इसके कारण ही

उन्होंने समाज में व्याप्त सती प्रथा, विधवा विवाह आदि के खिलाफ न केवल अंग्रेजी सरकार से मिलकर कानून बनवाया अपितु आम जनमानस में उसे एक कुरीति के रूप में प्रचारित किया। उस दौर की पत्रकारिता में इन सब तथ्यों को देखा जा सकता है। आजादी के आन्दोलन में पत्रकारिता मिशनरी भावना से ओत–प्रोत दिखायी पड़ती है। इसी भावना के कारण पराड़कर जी ने पत्रकारिता के संदर्भ में कहा था– 'जब तोप मुकाबिल हो अखबार निकालो'। इसीलिए पत्रकारिता को प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना गया है। वह एक सजग प्रहरी की भांति सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों को बिना किसी दबाव के पूरी बेबाकी के साथ प्रकट करती है। आजादी के बाद के परिदृश्य में पत्रकारिता विभिन्न तरह के दबावों से भी गुजरी है। भारतीय राजनीति में एक समय ऐसा भी आया है जब समाचार पत्र–पत्रिकाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया और उनके संपादकों को जेल भी भेजा गया। यह दौर आपातकाल का दौर है जिसमें हर तरह की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित किया गया। वहीं पत्रकारिता पर पूँजीवादी शक्तियों का भी कम दबाव नहीं रहा है। आज के समय में यदि इस तथ्य को जांचा जाय तो पता चलता है कि मीडिया के 70 प्रतिशत पर कुछ एक पूँजीपतियों का ही कब्जा है। भूमण्डलीकरण के दौर में जब पूँजी ज्ञान–विज्ञान सहित बाकी अन्य क्षेत्रों को भी नियंत्रित कर रही है। ऐसे में मीडिया की स्वतंत्रता और चौथे स्तम्भ के उत्तरदायित्व दोनों को बचाने का संघर्ष और कठिन हो जाता है। वर्तमान समय की मीडिया पूँजी के अतिरिक्त दबाव के बावजूद अपनी सकारात्मक उपस्थिति दर्ज कराती आ रही है जिसे गुजरात दंगों से लेकर मुजफ्फरनगर तक के दंगों में देखा जा सकता है। ऐसे में यह देखना आवश्यक हो जाता है कि क्या मीडिया पर बाजार का दबाव बढ़ता जा रहा है? उसके पीछे कौन सी शक्तियाँ हैं और उनकी मंशाएँ क्या हैं? क्या बाजार के दबाव में मीडिया की अपनी स्वायत्ता और सरोकारों की भूमिका बहुत सीमित होती जा रही है? क्या मीडिया बाजार के दबाव में अपनी भूमिका सही तरह से निभाने में सफल हो रहा है? इस दबाव से इलेक्ट्रानिक और प्रिन्ट मीडिया दोनों को गुजरना पड़ रहा है। भूमण्डलीकरण के बाद विज्ञापनों का दबाव जिस तरह से मीडिया में बढ़ता जा रहा है उससे जन सरोकारों की भूमिका बहुत सीमित होती जा रही है। आज के दौर में विज्ञापनों का स्वरूप पूरी तरह बदला हुआ है। विज्ञापन में प्रदर्शित वस्तु का गुणवत्ता कोई तालमेल नहीं है। भारत की पत्रकारिता में इसे आसानी से देखा जा सकता है।

संगोष्ठी निदेशक – प्रो0 विपिन सक्सेना, संकायाध्यक्ष, भाषा एवं साहित्य विद्यापीठ

संगोष्ठी सलाहकार – प्रो0 रिपु सूदन सिंह, सलाहकार, हिन्दी विभाग

संगोष्ठी संयोजक – डॉ0 शिल्पी वर्मा, समन्वयक, हिन्दी विभाग

कार्यक्रम विवरण

उद्घाटन सत्र

(22 मार्च 2017)

समय

प्रातः 10.00 बजे से 11.30 बजे तक

जलपान

समय : मध्याह्न 11.30 से 12.00 बजे

प्रथम सत्र :

हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य एवं जनसंचार माध्यम में हिन्दी की भूमिका

समय

दोपहर 12.00 बजे से 2.00 बजे तक

मध्याह्न भोजन

समय : 2.00 से 2.30 बजे

द्वितीय सत्र :

कॉरपोरेट की दुनिया और हिन्दी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का बदलता स्वरूप : भाषा एवं साहित्य का द्वन्द्व

समय

2.30 बजे से 5.00 बजे तक

समापन सत्र

समय : 5.00 से 6.00 बजे

राष्ट्रीय संगोष्ठी के विषय

1. **हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य एवं जनसंचार माध्यम में हिन्दी की भूमिका**
   - हिन्दी पत्रकारिता : उद्भव एवं विकास
   - 21वीं सदी की हिन्दी पत्रकारिता : चुनौतियाँ और मुद्दे पत्रकारिता : मिशनरीकरण के दौर से मुनाफे के दौर तक
   - राजनीतिक शक्तियों का पत्रकारिता पर बढ़ता दबाव
   - पत्रकारिता और नियंत्रण

2. **कॉरपोरेट की दुनिया और हिन्दी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का बदलता स्वरूप : भाषा एवं साहित्य का द्वन्द्व**
   - पूँजीवाद और जन सरोकार : इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
   - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में विज्ञापन संस्कृति का दबाव
   - प्रस्तुतीकरण के नए रूप
   - मीडिया में विनिवेश की नयी संस्कृति
   - सामाजिक/राजनीतिक मुद्दे और मीडिया
   - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और स्वनियमन

प्रतिभागियों हेतु निर्देश– शोध–सार भेजने की अन्तिम तिथि0 05 मार्च 2017 तथा शोध पत्र भेजने की अन्तिम तिथि 15 मार्च 2017 है। विद्यार्थियों/शोधार्थियों हेतु पंजीकरण शुल्क 500/– एवं शिक्षकों हेतु 1000/– मात्र है।

नोट– कृपया शोध–सार एवं शोध–पत्र कृतिदेव 10 फॉन्ट में टाइप कर नीचे दिये गए ईमेल–hindivibhagbbau@gmail.com पर भेजें। संगोश्ठी के उपरान्त चयनित शोध–पत्रो का प्रकाशन किया जायेगा। अतिथियों के भोजन/जलपान की व्यवस्था विश्वविद्यालय की तरफ से की जायेगी। प्रतिभागियों को आवास एवं मार्ग व्यय देय नहीं होगा।

संपर्क सूत्र–

डॉ0 शिल्पी वर्मा, कार्यक्रम संयोजक (8004000567)
डॉ0 शिप्रा किरण (7607071662) डॉ0 शिवशंकर यादव (9450568073),
डॉ0 अल्पना सिंह (7068855724) डॉ0 सर्वेश कुमार (8736978823),
डॉ0 अंशिता शुक्ला (7388331848)

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025

Babasaheb Bhimrao Ambedkar University

(A Central University)

Vidya Vihar, Raebareli Road, Lucknow-226025

राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पंजीकरण–प्रपत्र

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ : भाषा एवं साहित्य का द्वन्द्व

दिनाँक : 22 मार्च, 2017

नाम.....

पद नाम.....

विश्वविद्यालय / महाविद्यालय / संस्था का नाम.....

.....

.....

.....

दूरभाष : ऑफिस :..... आवास..... मो0.....

ई–मेल :.....

शोधपत्र का शीर्षक :.....

.....

.....

पंजीयन शुल्क : अध्यापक रू. 1000 ( ) शोधार्थी रू. 500 ( ) केवल नगद राशि उक्त तिथि को जमा कर अपना पंजीकरण करा सकते हैं। अभ्यर्थी पंजीकरण प्रपत्र को विभाग की ईमेल–hindivibhagbbau@gmail.com पर उपरोक्त तिथि से पहले भी भेज सकते हैं। ऐसे अभ्यर्थियों को पंजीकरण शुल्क निर्धारित तिथि को उपस्थित हो जमा करना होगा।

हस्ताक्षर.....

Website : www.bbau.ac.in

इक्कीसवीं सदी में हिन्दी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियाँ : भाषा एवं साहित्य का द्वन्द्व

तिथि : 22 मार्च, 2017

नाम..... संस्था.....

प्राप्त राशि नगद ..... रसीद संख्या.....

प्राप्तकर्त्ता